ॐ कार

ॐ कार यह ध्वनि सर्व धर्मद्धारा सन्मानित पवित्र मंगल ध्वनि है । सर्वज्ञ केसारे शरीर से ॐ कार ध्वनि प्रस्फुरित होती है । वह केवली भगवानकी दिव्य ध्वनि है । वेदोंकी निर्मित्ती उसी ध्वनिसे निर्माण हुई है । चार प्रकारकेवेद और नऊ प्रकारकेचेतनत्वोंकी भूमिका उसी ॐ कार ध्वनिद्धारा स्पष्ट हुई है ।

ॐ कार में पंचपरमेष्ठीका समावेश है । अ-अरिहंत , अ-शरीरी-सिद्ध-आ . . .आचार्य , उ . . . उपाध्याय , म . . . मुनि । ॐ कार से श्रद्धा स्थान भगवान का स्मरण होता है । ॐ कारसे सप्त सुरोंका सुस्वर संगीत झूम उठता है ।

ॐ कार का स्वरुप गणधर या गणपति केसमान है । चारों वेद गणधर केचार हाथ है गणधरको सभी धर्मोमें गणपति कहते है । ॐ कार ध्वनि रोगनाशक है । तनुलता तेजोमय बनती है ।

ॐ कार ध्वनि अंतर्दृष्टिको जागृत करती है । अंतस्तलमें नव-चेतना प्रस्फुरित करती है , और आत्मज्ञानकी ज्योति जगाती है ।

अनादि-अनंत-आनंदमय-तेजोमय प्रभुकेदर्शन का लाभ कराती है ।

कषाय नष्ट हो जाते हैं मन:शांति बढती है और अंतरात्मा जागृत होकर निनादित हो उठता है ।

इसी तनमंदिरमें भगवन्का निवास है । अंतरिम भक्ति उद्वेलित होती है और आत्मज्ञान की महानिधि झंकारित हो उठ्ती है ।

हे ॐ कार प्रभु, तुम्हे मेरा शतश: प्रणाम .

✶ ॐ नम : सिद्धेभ्य :

इस तनमंदिरमें सिद्ध परमात्मा अनादि कालसे विराजित है और अनंतकाल तक विराजमान रहेंगे । स्वयंसिद्ध परमात्मा अनादि अनंत , ज्ञानकलशसे परिपूर्ण , अखंड शाश्वत और

शक्तिमान है । प्रेरित ,अंतर्मुख आत्मा जब प्रकट होता है तो सिद्धत्वको प्राप्त होता है और उसीको मोक्ष या मुक्ति कहते है । वही सिद्धि है । दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य से ही आत्मा सिद्धि प्राप्त करता है । आत्मज्ञानमें रत होकर ही आत्मा मोक्षप्राप्त करता है ।

ऐसे सिद्धस्वरुप , शक्तिरुपी , ब्रह्मस्वरुपी सिद्धको मेरा प्रणाम !

यह दुनिया मांगल्य से परिपूर्ण है । सभी जीव मंगल है । सभी जीवोंमें भगवान का निवास है । ऐसी सभ्यग्दृष्टि प्राप्त करनेवाला जीव भव्य है । वह सभी जीवोंकी सुखशक्तिको पहचानता है । यही सभ्यग् - ज्ञान है ।

आत्मा और ज्ञानकी पवित्रतासे मंगलमय शरीर और भी पवित्र बन जाता है । वह तीर्थ बन जाता है । वीतराग बन जाता है ।

उसी मंगलमय ज्ञान की आराधना करनेवाले
ज्ञानस्वरुपी आत्माको मेरा प्रणाम ।

ईश्वर

- ईश्वरकी प्रिती याने असीम भक्ती ।
- ईश्वर केप्रति विश्वास याने दुनियामें विश्वास ! आत्मा और सत्यमें विश्वास ।
- जिसका वर्णन नहीं कर सकते , लेकिन जिसका अस्तित्व हर समय प्रतीत होता है ,और जिसकेबारेमें हमें कुछ भी जानकारी नहीं , वही ईश्वर है ।
- ईश्वर सज्जनोंका मित्र , ज्ञानियोंका मार्गदर्शक , मूर्खोंका जुलूमशहा और बुरे का शत्रु है ।
- ईश्वरकी परिभाषा नहीं हो सकती , लेकिन आत्माद्धारा उसकेअस्तित्वकी अनुभूती सतत होती है ।

✶ देशका दारिद्र्य और अज्ञान नष्ट करना याने ईश्वर सेवा है ।

✶ ईश्वर एकही है । लेकिन भक्त उसका वर्णन अलग अलग ढंगसे करते है ।

✶ परमात्माको शक्ति असीम है उसकेपरिणामसे हमारी श्रद्धा छोटी पडती है ।

✶ सभी व्याधियोंकी एकही दवा है, और वह है ईश्वरका नामस्करण ।

✶ ईश्वर निराकार हैं, किंतु भक्तकी प्रार्थनाकेअनुसार वह अपनी शक्तिसे विविधरुप धारण करता है ।

✶ भगवानकी कृपाकेबिना मनुष्य केवल अपने पराक्रमों से कुछ नहीं कर सकता ।

भक्तृ - श्रद्धा

✶ भक्ति अमृतमय है । उसीसे मनुष्य अमर बनता है , तृप्त होता है ।

✶ 'भक्ति' उपासना का अत्यंत सरल और सुलभ मार्ग है ।

✶ भक्तिमें तन्मयता , एकाग्रता और शुद्धता चाहिये । ज्ञानदृष्टिकेबिना भक्ति व्यर्थ हैं ।

✶ निस्सीम गुरू भक्ति मोक्षसुखकी प्राप्ति कराती है ।

✶ भक्ति निस्पृह और निष्काम चाहिए । मनमें इच्छा रखकर भक्ति करनेवाला आराधक , जन्मान्धकेसमान है ।

✶ भक्ति दांभिकता नहीं ,मन:शुद्धिका मार्ग है ।

✶ भक्तिकेसाधनसेही मुक्तिका साध्य प्राप्त होता है ।

✶ श्रद्धा ज्ञान की जननी है ।

✶ श्रद्धा दीपस्तंभ केसमान है ।

✶ श्रद्धाकी नींवपर धर्मकी इमारत खडी रहती है । जहॉ श्रद्धा नहीं , वहॉ धर्म नहीं ।

✶ 'भक्ति' आत्माका दैदिप्यमान रुप है । भक्ति याने नित्य जागृत अवस्था ।

- ✶ भक्ति अग्निकेसमान विकारोंकी चिंधियॉ जला देती है । जीवोंका प्रभुकेसाथ मिलन कराती है । भक्तिमें आसक्ति नहीं रहती ।
- ✶ भक्तिकेद्वारा सारे जीव विश्वकेसाथ एक अनोखी एकरुपता प्राप्त करते है । अनेक शास्त्रोंका दान भक्तिकेसामने तुच्छ है ।
- ✶ भक्ति दृढ होनेकेबाद शरीर रक्षणकेलिए आवश्यक चीजोंको छोडकर सभी लौकिक कर्मोंका त्याग करना चाहिए ।
- ✶ जहॉ अहंकारका विसर्जन और स्वार्थका समर्पण है, वहीं सच्ची भक्ति होती है । पूज्य और पूजकमें किसी तरहका भेद या अंतर नहीं होता , वही भक्ति है ।
- ✶ जहॉ आशा ,अभिलाषा और आसक्ति नहीं होती वही भक्ति है । सच्चे भक्तिसे मनुष्य भगवान स्वरुप बन जाता है ।
- ✶ दृढ परिचयकेबिना सच्चा प्रेम निर्माण नहीं होता । इसलिए देव, शास्त्र ,गुरुभक्ति और स्वाध्याय नित्य नियमसे करना चाहिए । उसकेबिना सच्ची भक्ति निर्माण नहीं हो सकती ।
- ✶ भक्ति स्वयंसिद्धा है । उसको सिद्ध करने केलिए किसी प्रमाणकी आवश्यकता नहीं ।
- ✶ भक्ति का दुसरा रुप है वियोग । प्रगाढ प्रीतीसे ही विरहकी निर्मिती होती है । जो शक्ति जीवनको गती देती है वह है श्रद्धा वह प्राणोंसे निर्माण होती है ।
- ✶ भक्तिबिना जीवन याने नमक केबिना भोजन है । भक्तिसे नया उत्साह , आनंद निर्माण होता है ।
- ✶ भक्तिरुपी सत्तासे बडोंबडोंकेसिंहासन हिलने लगते है ।
- ✶ भक्तिसे मन और आत्मा शुद्ध बनते है । हरेक जन्ममें विविध प्रकारकेअच्छे बुरे संस्कार होते है । भक्ति इन बुरे संस्कारोंको नष्ट करनेमे मदत करती है ।
- ✶ भक्ति ज्ञान व कर्तृत्वको सदैव जागृत रखती है । भक्ति सूर्य केसमान तेजोमय नेत्रवाली होती है ।

✶ धर्म

✶ धर्मसे मौत्रिभावकी वृद्धि होती है , वैरभाव कम होता है ।

✶ धर्म अंखंडित है ,वह कभी खंडित नहीं होता । धर्म यह आत्मा का उत्तम गुण है ,और उसका निवास हरकेमनुष्यकेमनमें अदृश्य भक्ति है ।

✶ दया धर्म का मूल है ।जिसमें दया या अनुकंम्पाको स्थान नहीं वह धर्म नहीं ।

✶ लोभ धर्म कार्य में बाधा डालता है ।

✶ धर्मको विश्वास और चारित्र्य संपन्नता का आधार चाहिए ।

✶ मनुष्यकी उन्नतीकेलिए धर्म सर्वश्रेष्ठ साधन है इस लोकमें और परलोकमेंभी।

✶ धर्मही श्रद्धा और ज्ञानकी शक्ति है ।

✶ कुछ लोग वस्त्र का त्याग करते है , लेकिन अधर्म त्याग नहीं करते । कुछ धर्म त्याग करते है वस्त्रत्याग नहीं करते । कुछ लोग धर्म और वस्त्र दोनोंका त्याग करते है । और कुछ दोनोंको नहीं छोडते ।

✶ जहॉ धर्माचरण शुद्ध और गतिशील रहता है । वहॉ सर्वश्रेष्ठ सामर्थ्यका आविष्कार होता है ।

✶ धर्मकेप्रति असीम निष्ठा , यह वीरता का लक्षण है ।

✶ धर्मदान सब दानोंसे श्रेष्ठ दान है । धर्मरक्षा सब प्रकारकी रक्षाओंमे श्रेष्ठ है । धर्मप्रेम सभी प्रेमोंको पराजित करता है । तृष्णाक्षय सब दु:खोंपर विजयपाता है ।

✶ धर्मात्मा अजात शत्रु होता है ।

✶ धर्मज्ञानी सुख दु:खोंकेप्रति सम्यक्दृष्टि रखता है ।

✶ अधर्मचरण करकेजीवित रहने से धर्माचरण से आनेवाली मृत्यु श्रेष्ठ है ।
धर्मका मूल बिनय और आचार है ।

✶ आत्मज्ञान से ही धर्मारंभ होता है ।

✶ धर्मकेप्रति प्रीति , तत्त्वकेप्रति आदर और विश्वमैत्रीकी भावना मनुष्यको स्वर्गसुखकेप्रति प्रेरित करती है ।

✶ सत्यश्रवणकी क्षमता धर्मजागृतिकी निशानी है ।

✶ धर्मका अर्थ है सत्यकी खोज नीति अपनाना ।

✶ धर्मका बीज शांती और फल परमशांती है ।

✶ धर्मका निवास भौतिक ज्ञानमें नहीं पवित्र जीवन में होता है ।
सुख-शांति-वादरहितता = धर्म ।

✶ संप्रदाय विषमय , और धर्म अमृतमय है ।

✶ जो व्यक्तिको सुखी , शांत निराकुल बनाकर विश्वबंधत्वकी ज्योति जगाता है , वही सच्चा धर्म हैं ।

✶ धार्मिक धर्मकी और अधार्मिक कर्मकी महिमा गाता है ।

✶ धर्म न्याय और नीति आत्माका सामर्थ्य बढाती है ।

✶ सदाचारी व्यक्ति धर्मकी अधिकारी है ।

✶ जिस घरमें स्नेह और प्रीतिका वास्तव्य है, जहॉ धर्म का साम्राज्य है, वह घर स्वर्ग केसमान है ।

✶ धर्म यह एक ऐसी वस्तु है जिसकेअनुभूति का फल त्वरित मिलता है ।

✶ धर्मविरहित राजनीति , प्राणरहित शरीरकेसमान है । उसको दूर रखनाहि अच्छा है ।

✶ प्राणीमात्राको चिरकाल जीवदान देना यही धर्मका कार्य है ।

✶ धर्म यह संसारी जीवको मोक्षकेपास पहुँचनेवाला सेतू है इस लिए उसका एक कदम संसारमें और दूसरा मोक्षमें है ।

✶ विविध रंगोंकेगायोंका दूध शुभ्र रहता है , उसी तरह विविध धर्म-संप्रदायोकेक्रियाकांड भिन्न रहते हुए भी उनका तत्वज्ञान एकही और कल्याणकारी रहता है।

✶ धर्मरुपी वृक्षको दानरुपी जलवृष्टी करनेकेबाद सभी प्रकारकेफल आते है । लेकिन इस धर्मवृक्षका मिथ्यात्व अग्निसे संरक्षण करना चाहिए ।

✶ विरक्ती

- ✶ विरक्ती यह बुद्धी का धर्म है । विरक्ती से आदमी निर्भय बनता है ।
- ✶ ज्ञानबिना मुक्ती नहीं , विरक्ती बिना ज्ञान नहीं ।
- ✶ विरक्ती याने मन:शुद्धी , शुद्ध मनमें हि उपदेश का प्रभाव पडता है ।
- ✶ सुंदर स्त्रीको देखकर भी जिनकेमनमें विरक्ती होती है वे अभिनंदन केपात्र है ।
- ✶ विरक्ती में प्रचंड प्रेरणा भरी हुई है ।
- ✶ विरक्त जीवन याने भीतरी कु-प्रवृत्तीसे युद्ध ।
- ✶ विरक्ती केबिना ज्ञान नहीं, ज्ञानबिना मुक्ती नहीं , त्याग का मर्म समझेबिना किया हुआ त्याग , बोझ बन जाता है । आत्मोद्धार और दुनियाका स्वास्थ्य यही सच्चे वैराग्य का ध्येय है । वैराग्य हमेशा विवेकसे युक्त होना चाहिए ।
- ✶ विवेकयुक्त वैराग्य अग्निकेसमान है ।
- ✶ सभी प्रकारकेभयकेनिवासस्थान रुप इस संसारमें केवल विरक्ती ही अभय देती है ।

मौन

२. मौनकी बेहोषी, आक्रोश और संतोष ये तीन अवस्थाएँ है । बेहोशीसे मनको जडता प्राप्त होती है । आक्रोशसे विवेकका अंकुश नष्ट होता है । संतोषसे मन तन्मय हो जाता है । सन्मार्गकी ओर प्रेरित होता है ।
३. मौन पलायनबाद नहीं मौनसे मन शुद्ध होता । उसकेबादहि विचारोंकी ओर विहार कर सकते है ।
४. मौन का शांतिमय जीवनसे संबंध है । मौनसे हि वैचारिक शरीर प्राप्त होता है ।
५. मौन और ध्यानसे चैतन्यशक्तीका साक्षात्कार होता है ।
६. मौनव्रत यह सत्यकेउपासककी दैवी शक्ति है । अतिशयोक्तिकेआधिन होना, सत्यको सुविधाकेअनुसार बदलना यह प्राकृतिक दुर्बलता है । मौन यह उसीका उपाय है ।
७. मौन का मार्ग आत्मशुद्धीकेसाथ साथ जीवनको भी शुद्ध बनाता है ।

८. मौन से वाणी का सामर्थ्य बढता है , वाचाळता उसे नष्ट करती है ।

९. मौन याने मनकी रिक्तता , वाणीकी शून्यता । सतत बोलनेसे आदमीकी चैतन्य शक्ती कम होती है । वाचाशक्ति प्रचंड है । लेकिन मौन यह दिव्य रसायन है रसायनद्धारा अध्यात्मिकताका उदय होता है ।

१०. मौनसे चिंता नष्ट करनेका सामर्थ्य है । आजकेइस गतिशील जीवनमें आदमीका यंत्र बन गया है । उसकेमनका तनाव नष्ट करने केलिए मौन यह उत्तम दवा है ।

नम्रता

✶ सद्‌गुणोंकी सुंदर नीवं याने नम्रता ।

✶ नम्रता याने अहंकारका नाश ।

✶ नम्रता याने ज्ञानको तोलनेका मापदंड ।

✶ नम्रता यह पराक्रमका भूषण है ।

✶ नम्रता सर्वश्रेष्ठ धर्म है ।

✶ भक्तको ज्ञान कम हो तो चल सकता है, लेकिन नम्र होना जरुरी है । नम्रतासे वह सहजतासे ज्ञान प्राप्त कर सकता है ।

✶ नम्रता पाषाणको भी मोनकेसमान मृदु बनाती है ।

✶ कष्ट और संकटोंका सामना करनेकेबाद मनुष्य विनम्र बनता है ।

✶ यदि हमको स्वर्गपाप्ति चाहिए तो नम्र बनना आवश्यक है, क्योंकि वहॉ दिवारे बडी होती है, लेकिन दरवाजे छोटे रहते है ।

✶ अहंकारसे नम्रताका मूल्य अधिक है ।

ज्ञान-अज्ञान

✶ ज्ञानमें शांति व अज्ञानमें अशांति है ।

✶ अज्ञान ही मृत्यु है ।

✶ अज्ञानपर आधारित आनंद क्षणिक और अशुद्ध है ।

✶ ज्ञान और योगबलकेबिना जीवन अशांत होता है ।

✶ अज्ञानको जाननेवाला कभी न कभी ज्ञानी बन सकता है । किन्तु जिसे अपने अज्ञानकी जानकारी नहीं वह कभी भी ज्ञानी नहीं बन सकता ।

✶ अनुभूतिद्वारा प्राप्त हुआ ज्ञान यह हजारो किताबोंकेपढनेसे प्राप्त हुए ज्ञानसे श्रेष्ठ है ।

✶ आत्मज्ञान ही जीवनको प्रभावी बनानेमें समर्थ है ।

✶ अज्ञान और आलस्य ये आदमीकेप्रबल शत्रू है ।

✶ निष्कलंक ज्ञान और शुद्ध चारित्र्य यही सच्ची संपत्ती है ।

✶ अज्ञानी और सदैव निद्राधीन रहते हे और ज्ञानी जागृत ।

✶ ज्ञान यह सर्वशास्त्रोंका सार है ।

✶ ज्ञान आत्माका स्वभाव है । वह आत्मासे अभिन्न है ।

✶ ज्ञानमय जीवनहि श्रेष्ठ है ।

✶ अज्ञानी आत्मा अपने कर्मोंका कर्ता होता है ।

✶ अज्ञानसे किये गये तपसे मुक्ति नहीं मिलेगी ।

✶ जिज्ञासासे ज्ञानकी वृद्धी होती है। ज्ञानसे प्रज्ञा और प्रज्ञासे सम्यग्बोध होता है ।

✶ ज्ञान गुणरुप है । मतिज्ञान उसकी अवस्था है ।

✶ ज्ञान या विघा माता , पिता और आचार्यकेअनुग्रहसे हि प्राप्त होती है ।

✶ अध्यात्मज्ञानकी उपासनाद्वारा सत् , चित् आनंदकी प्राप्ती होती है । अज्ञान सत् को प्रतिबंध करता है । राग द्वेषकी सीमा पार कियेबिना सच्चिदानंद की प्राप्ति नहीं होती ।

✶ विज्ञान और अध्यात्म दोनोंकेसमन्वयकेबिना दुनियाका कल्याण नहीं हो सकता।

- ज्ञानी आदमी युद्धादि संघर्षकेसमय प्रसन्नता नहीं खोता ।
- ज्ञानसे निर्भयता प्राप्त होती है, और अज्ञानसे डर ।
- तत्वज्ञान ऋषियोंकी प्रयोगशाला है । आनंद निधान चैतन्यकी प्राप्ति किए बिना तत्वदर्शीयोंके साधनाकेप्रयोग समाप्त नहीं होते ।
- ज्ञान , संपदा और अज्ञान विपदा है ।
- ज्ञान एक ऐसा अनुपम पेय है , जिसकेपीनेसे अंत:चेतना परिपुष्ट होती है ।
- ज्ञान चित् शक्ति है । वह अमर है । वह आत्माका अविनाशी अव्यवच्छेदक गुण है । जहॉ ज्ञान वहॉ आत्मा । जहॉ सम्यग्ज्ञान वहीं शुद्ध आत्मा ।
- ज्ञानकेबिना चारित्र्य नहीं । ज्ञानसे हि त्यागको सुवर्णमयी , सुगंधमय स्वरुप प्राप्त होता है । धर्मका पूर्ण ज्ञान प्राप्त किएबिना सर्वसंग परित्याग निरर्थक है ।
- अज्ञान जीवनमें संघर्ष, पतन और अशांतिका कारण है । ज्ञानसे आदमीका उत्कर्ष होता है ।
- मन और बुद्धिकी परिपक्वतासे ज्ञानका जन्म होता है । ज्ञानकेसमान दूसरी कोई पवित्र वस्तू नहीं । अज्ञान यह अधोगतीकी नींव है ।
- द्रव्यमय यज्ञसे, ज्ञानका यज्ञ श्रेष्ठ है ।
- ज्ञानक फल, उसकी सार्थकता आचारमें है ।
- निर्बुद्धताकेसमान पाप नहीं ।
- ज्ञानसे ध्यानसिद्धि होती है । कर्मोकी निर्जरा होती है । निर्जरासे मोक्ष प्राप्त होता है, इसलिए सभी लोगोंने ज्ञानमग्न होना चाहिए ।
- ज्ञान और विरक्ति परस्पर पूरक है । एकहि वस्तुकेवे दो भाग है । ज्ञानसे आत्माका उत्कर्ष होता है,लेकिन यदि उसकेसाथ वैराग्य हो तो सोनेमें सुहागा केसमान होता है ।
- ज्ञानको तिसरा नेत्र कहा जाता है । ज्ञानकी व्याप्ती बहुत विशाल है । एक जन्म में भी सभी विघाऍ आत्मासात् नहीं हो सकती । आत्मज्ञान यह ज्ञानवृक्षका मूल है । उसीद्वारा आदमी सर्वज्ञ व ज्ञाता होता है । इसी कारण आत्मज्ञानका अंगिकार करना चाहिए ।

✶ ज्ञान के पॉच भेदमें केवलज्ञान यही परिपूर्ण ज्ञान है । सूर्य के उदयसे अंध:कार नष्ट होता है , इसीप्रकार केवलज्ञानसे कर्मरुपी अंध:कार नष्ट होता है ।

माता

✶ मातृपूजा याने आत्माकी पूजा । माता याने निस्वार्थ सेवाकी प्रतिमूर्ति ।

✶ माताका प्रेम जहॉ है वह कुटीर राजाकेमहलकेसारे ऐश्वर्योसे श्रेष्ठ है । मातृप्रेम जहॉ नहीं वहॉ महल और राजभवनभी स्मशानकेसमान है ।

✶ माताको अलंकारोंसे नहीं प्रेमसे शोभा आती है ।

✶ स्वयंनिर्मित सृष्टीकेचारो ओर भ्रमण करनेमें असमर्थ होनेकेकारण परमात्माने वात्सल्यसिंधू माताकी निर्मिती की है ।

✶ माताकी ममता का एक बुँध भी अमृतकेसागरकेमधुर होता है ।

✶ माताकेस्नेहका ऋण त्रिभुवनकेस्वामी स्वयं भगवान भी नहीं चुका सकते ।

✶ माता और मातृभूमी स्वर्गसे भी श्रेष्ठ है ।

✶ माताका ह्दय हर बालककी पाठशाला है ।

✶ एक माता सौ शिक्षकोंकेमूल्यबल है ।

✶ एकबार कुपुत्र जन्म ले सकता है , लेकिन माता कुमाता नहीं हो सकती ।

✶ माता याने मानवजीवन का गंगाजल है ।

✶ मातृत्वमें ही स्त्रीजीवनकी पूर्णता है ।

✶ माता पृथ्वीसे भी बडी है ।

✶ सच्चा स्वर्ग मॉ केचरणोंकेपास है ।

✶ मातृपूजा याने अच्छे प्रकारसे की गई भगवानकी पूजा है ।

✶ माताकेसंस्कारकेबिना भवितव्य नहीं और बालककेभवितव्य केबिना देशका उद्धार नहीं।

प्रेम

- ✶ सब जीवोंकेप्रति प्रेमभावना, सबसे श्रेष्ठ शक्ती है ।
- ✶ प्रेमपूर्ण हृदयसे हि आत्मासे संबंध स्थापित होता है ।
- ✶ प्रीतीसे मनकी सारी शक्तियॉ केंद्रीभूत होती है ।
- ✶ कृतिशील प्रीति, दुसरोंको पराजित करनेका साधन है ।
- ✶ प्रेमसे और सेवासे हि सेवाके ऋणकी पूर्ति होती है ।
- ✶ धर्म प्रेमसे व्यक्ति निष्पाप और निर्भय बनती है ।
- ✶ अहंकार केत्यागबिना सच्चे प्रेमका साक्षात्कार नहीं होता ।
- ✶ दुसरोंकेप्रेमकी अपेक्षा करनेसे पहिले स्वयं प्रेमपूर्ण आचरण करना जरुरी है ।
- ✶ नितांत शुद्ध और निरतिशय प्रेमसे श्रेष्ठ कोई नहीं । प्रेमकेद्धारा शत्रुको पराजित किया जा सकता है ।
- ✶ प्रेमरुपी गुलाब मत्सररुपी कंटकोंसे युक्त रहता है । गुलाब नष्ट होने के बाद भी कंटक रहते है । उसी तरह प्रेम नष्ट होने के बाद मत्सर बना रहता है ।
- ✶ परस्पर सद्भावना और सहानुभूति यही प्रेमका निर्झर है ।
- ✶ प्रीति यह प्राणवायू के समान है उसीसे जीवनमें प्रभातका उदय होता है ।
- ✶ प्रेमकेतीन प्रकार - १)जन्मजात २) उपभोगात्मक ३) उदात्त

  माताका प्रेम जन्मजात रहता है ।

  पत्नीका प्रेम उपभोगात्मक रहता है ।

  लेकिन त्यागियोंका प्रेम उदात्त रहता है ।
- ✶ दुसरोंकेलिए स्वयंको भूल जाना यह प्रेमकी आत्मा है । लेकिन यह प्रेमरुपी आत्मा अविकारी चाहिए ।

✶ प्रेम दृष्टीहीन होता है । प्रेमसे अंध बने लोगोंको सारासार विचार नहीं रहता । उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रहता । कमलपर मुग्ध होनेंवाले भ्रमरकेसमान वह सर्वनाशकी ओर बढता है ।

✶ प्रेम स्वर्गका मार्ग है ।

✶ प्रेम संसारको प्रकाशीत करनेवाली ज्योती है ।

✶ प्रेम आत्माका स्वयंभू निर्झर है ।

✶ प्रेम सुगंध फैलानेवाला सुंदर पुष्प है ।

✶ प्रीती कुसुमसे कोमल और वज्रसे कठिण है ।

✶ प्रेम करना एक कला है, लेकिन उसे चिरंतन रखना एक साधना है ।

✶ सूर्यकेकिरणोंसे जिस प्रकार हिमराशी द्रवित होती है, उसी प्रकार अहंकारोंकी राशी प्रेमकी आर्द्रतासे द्रवित होती है ।

✶ प्रीती ऑखोंसे नहीं ह्रदयसे देखती है ।

✶ मृत्यु शाप है और प्रीती उःशाप ।

✶ प्रेम पापियोंको भी सुधारता है ।

✶ प्रेमकी सेवा सत्ताकेवसले नहीं प्राप्त होती ।

✶ भाई ,बहनकेप्रेममें पवित्रता होती है, पतिपत्नीकेप्रेममें मादकता रहती है । प्रेमकी पवित्रता मनको शांती देती है ।

✶ उन्होंने परिचितोंका सर्कल बनाया और हम बाहरहि रह गये । हमने प्रेमका सर्कल बनाया और उसमें सब समाविष्ट हुए ।

✶ प्रेमका क्षेत्र विस्तर्ण है, मर्यादित नहीं और उसे समयका बंधन नहीं जड,चेतन सभी वस्तुओंपर उसकी सत्ता चलती है ।

✶ मानवता का दुसरा नाम प्रेम है । सभी जीवोंपर मन:पूर्वक प्रेम करनाहि मानवता है ।

✶ प्रितीकेविश्वामें प्रतारणा जैसा महापाप नहीं । अंतर्बाहय शुद्धी यही प्रीतीका प्राण है ।

✶ सौंदर्य

✶ सुंदर वस्तुकी अपेक्षा, वस्तुका सौंदर्य अधिक शाश्वत रहता है ।

✶ उत्तम सौंदर्य मनकी पवित्रामें है ।

✶ सौंदर्यको आभूषणोंकी जरुरी नहीं ।कोमलता आभूषणोंका बोझा नहीं उठा सकता।

✶ सौंदर्य यह स्त्रीका सामर्थ्य है , और पुरुषोंका सौंदर्य है सामर्थ्य ।

✶ सौंदर्यका भूषण शील है, और चारित्र्यका भूषण संयम ।

✶ यदि तुम्हारे अंतरंगमे सौंदर्य नहीं है , तो सौंदर्यकी खोजकेलिए दुनिया ढूँढने पर भी वह तुम्हारे साथ नहीं लगेगा ।

✶ सद्‌गुणों केबिना सौंदर्य यह अभिशाप है ।

✶ सौंदर्यका आदर्श सादगी और शांति है ।

✶ सौंदर्य यह आदमी की शक्ति है और हास्य उसकी तलवार ।

✶ सौंदर्य परमेश्वरकी निर्मितीका सर्वश्रेष्ठ सर्जन है ।

✶ बाह्य सौंदर्य देखनेकी अपेक्षा अंतरंगका सौंदर्य देखना सिखो ।

✶ ज्ञानेंद्रियकेसमान सौंदर्य एक प्राकृतिक देन है ।

✶ बारसिंगोंकेसिंग उसे मौतकेमुँहमें ले जाते है , उसी प्रकार सुंदर स्त्रीका सौंदर्य , उसके लिए विपत्तीका निमित्त बन जाता है ।

✶ सुंदरता यह सार्वजनिक और सार्वकालिक प्रीति है । एकहि सुंदर वस्तुकेआस्वादक अनेक हो सकते है ।अनेकात्मक उपभोगसे सौंदर्य समाप्त नहीं होता या मलिन नहीं होता । जहाँ रसमयता खत्म होती है वही सुंदरताकी प्रतीती होती है ।

✶ असामान्य कलावस्तु देखकर मनमें अनुभूतिगम्य तरंग उठते है, वही सौंदर्य है । वह इंद्रियगम्य है । उससे मनमें जो तेजोमंडल निर्माण होता है, वही सौंदर्य है । इसिलिए इंद्रियकेसाथसाथ मनकी चेतना उल्हासित हुए बिना सौंदर्यकी अनुभूति नहीं हो सकती ।

✶ रसिक ह्रदयको तृप्त करकेभी जो पूर्णतया बाकी रहता है वही सच्चा सौंदर्य है । सबको सुख देकर भी वह सुखरुप रहता है । इस दृष्टीसे देखा जाय, तो सौंदर्य यह सामान्य उपभोगकेलिए न होकर आंतरिक अनुभूतिका विषय है ।

संयम

✶ संयम यह व्यक्तिकेशक्तिकेशक्तिका रुप है ।

✶ जो मनको पराजित करता है, वह दुनियापर विजय पा सकता है ।

✶ जितना आहारका प्रमाण अधिक, उतनी व्याधि अधिक उतनीहि दवाईयॉ जादा । इसलिए आहार पर संयम रखना आवश्यक ।

✶ संयमी आत्माहि सर्वशक्तिमान बन सकता है ।

✶ जीवन सर्वार्थसे परिपूर्ण होनेकेलिए संयमकी आवश्यकता है ।

✶ मन सामर्थ्यपूर्ण बनानेकेलिए जिव्हापर संयम रखना आवश्यक है ।

✶ सुखकेलिए संयमकी आवश्यकता है ।

✶ मानवजीवनमें संयम केलिए महत्वका स्थान है । असंयमी लोग रोग और आपत्तियोंको नियंत्रण देते है । संयमसे दीर्घायु प्राप्त होती है । जीवनमें संयमको स्थान देनेसे सुख और संतोषकी प्राप्ति होती है ।

दान

✶ कंजूस व्यक्तिको सभी ओरसे दु:ख घेर लेते हैं ।

✶ श्रेष्ठ व्यक्तिका दान भीं कल्याणप्रद रहता है ।

✶ दान यह धर्मकी पूर्णता है । दान धर्म का शृंगार है ।

- ✶ सच्चे मन से किया हुआ दान अनमोल है ।
- ✶ बिन मॉगे दिया हुआ दान श्रेष्ठ है । याचना करनेकेबाद किया हुआ दान कनिष्ठ है ।
- ✶ दान लेनेकी सुखकी अपेक्षा दान देनेमें अधिक आनंद प्राप्त होता है ।
- ✶ दानशूर व्यक्तिका कोष कभी रिक्त नहीं होता ।
- ✶ समर्थ होकर भी क्षमा करनेवाला, और दरिद्री होकर भी दान करनेवाली व्यक्ति स्वर्गसे भी श्रेष्ठ है ।
- ✶ आध्यात्मिक ज्ञानका दान यह श्रेष्ठ दान है ।
- ✶ दानकेआवरणसे सैंकडो पाप छुपाये जाते है ।
- ✶ दानसे किर्ती बढती है, धनकेसंचयसे नहीं । पानी बरसानेवाला मेघ उपर रहता है । जलका संचय करनेवाला सागर निचे रहता है ।
- ✶ दानकेसमान पुण्य नहीं । इसलिए दोंनो हाथोसे दान करना चाहिए । दानी आदमीको पाप स्पर्श नहीं कर सकता ।
- ✶ जो दान नहीं देता, श्रेष्ठ आदर्शोपर श्रद्धा नहीं रखता, सत्कर्म नहीं करता उसे असूर-राक्षस कहा जाता है ।
- ✶ याचक मरता है, लेकिन दाता कभी नहीं मरता । दातृत्वकेरुपसे वह अमर रहता है ।

सत्य

- ✶ सत्य धर्मविघापीठसे प्राप्त उपाधी है ।
- ✶ सत्य बोलना, उदात्त लिखना,उपयोगीताको देखकर ज्ञान संपादन और देशहितका कार्य करना चाहिए ।
- ✶ सत्यका पूर्णरुपसे स्वीकार कियेबिना,अहिंसाका वास्तवरुप प्रकट नहीं हो सकता।
- ✶ सत्यकेआग्रहकेकोशमें अपयश नहीं ।

- ✶ सत्य और न्यायसे दुसरा कोई धर्म नहीं है ।
- ✶ सत्य यह नैतिकताका मूल तत्व है ।
- ✶ सत्य कटु रहता है । लेकिन कटु सत्य बोलना हिंसात्मक है । जिससे पापमें वृद्धी हो ऐसा सत्यभी नही बोलना चाहिए ।
- ✶ स्वयंकेबारेमें कहा गया कटु सत्य पचाना आदमीकेलिए सुलभ नहीं ।
- ✶ सत्य यह सत्तासे श्रेष्ठ है ।
- ✶ सत्यकी खोज करना, उसका सच्चा स्वरुप खोजना यह कठीण कार्य है, क्योंकि सत्य विशाल और व्यापक है ।
- ✶ सत्य यह नीतीका मर्म है, धर्मकेबिना नीती निरर्थक है ।
- ✶ स्वकल्याणकेलिए स्वीकृत हुआ सत्य-महाव्रत दुनियाको सत्य पालन करनेकी प्रेरणा देती है ।
- ✶ सत्य यही वचनका भूषण है ।
- ✶ सत्यकी छोटीसी चिंगारी असत्यका महामेरु भस्म करनेमें समर्थ है ।

अपरिग्रह

- ✶ जो ममत्व बुद्धिका त्याग करता है, वह परिग्रहका भी त्याग कर सकता है ।
- ✶ तृष्णासे उपाधी बढती है, उपाधीसे दु:ख बढता है ।
- ✶ भोग, परिग्रह,हिंसा और विषयासक्ती ये विपत्तीकेमार्ग है ।
- ✶ संतोषी वृती सुखकेमार्गकी ओर बढती है ।
- ✶ तृष्णाको अपुर्णताका शाप है, इसी कारण वह सदा अतृप्त रहती है ।
- ✶ द्रव्य, संग्रह करनेसे नहीं बढता , खर्च करनेसे बढता है ।
- ✶ धनलोलुपता आदमीको स्नेहशुन्य बनाती है । निस्पृहता और विषयोपभोगकी अनिच्चा यह उत्कृष्ट सुख है ।

- ✶ संसारकेमायाजालमें जखडा हुआ आदमी वैराग्यकेबिना बंधनमुक्त नहीं होता ।
- ✶ परिग्रह पॉच अनिष्ट प्रवृतियोंको जन्म देता है । हिंसा , असत्य , चोरी , अभिषाला और विषय वासनाकी पूर्ति ये उसीकेरुप है ।
- ✶ परिग्रहकी मूर्च्छा यह पापका मूल है ।

भय

- ✶ विनाशक और पापका प्रमुख कारण भय है ।
- ✶ अज्ञानकेकारण भयकी निर्मिती होती है ।
- ✶ जहॉ भय है, वहॉ धर्म नहीं ।
- ✶ भयमे दु:ख निर्माण होता है, भय में मृत्यू आती है और भयसे हि बहुतसी बुरी बाते निर्माण होती है ।
- ✶ निर्मल मनमेंहि निर्भयता जन्म लेती है ।
- ✶ भयकेनींवपरहि धर्मकी शुरुवात होती है, यह बात झूठ नहीं ।
- ✶ अध्यात्मकेक्षेत्रमें भयको स्थान नहीं । निर्भय मनुष्यहि उस क्षेत्रसे प्रवेश पाता है ।
- ✶ भय याने आदमीका मन, उसकेअपराधका जो कर देता है वह है ।
- ✶ जिनको पराजयका डर है, उनकी पराजय निश्चित है ।
- ✶ डरपोक आदमी मृत्यूकेपहलेहि अनेकबार मरते है, शुर आदमी एकबारहि मरता है ।
- ✶ भय निद्राका और मन:स्वास्थ्यका शत्रु है ।
- ✶ निर्भयता जीवनदायी है । भय मृत्यूकेसमान आत्माको पीडा देता है । निर्भय व्यक्ति मृत्यूसे और सर्व विघ्नोंसे मुक्त रहता है ।

आनंद - प्रसन्नता

✶ सच्चा आनंद दूसरोंको देनेमें प्राप्त होता है, लेनेमें अथवा मॉगनेमें नहीं होता ।

✶ परिश्रमसे आनंद निर्माण होता है, हमेशा काममें रहनेसे जीवन सुखी बनता है ।

✶ आनंदी वृत्ति और संतोषकी बाते सौंदर्यको बढाती है ।

✶ प्रसन्नता आरोग्यका आधार है और उदासीनता आत्माकेलिए विषकेसमान है ।

✶ प्रसन्नचित व्यक्ति अपनी बुद्धि शीघ्र स्थिर कर सकता है ।

✶ प्रसन्न व्यक्ति दीर्घायुषी होती है ।

✶ प्रसन्नता आत्माकी शक्ति है ।

✶ प्रसन्नतासे लिया हुआ बोझ हल्का प्रतीत होता है ।

✶ प्रसन्नता भगवानकी दी हुई दवा है ।

✶ वसंत ऋतुकेसमान प्रसन्नता मनरुपी उघानकेकलियोंको विकसित करती है ।

✶ हम जितनी प्रसन्नता दूसरोंमें बॉटेंगे उससे द्विगुणित आनंद हम प्राप्त कर सकते है ।

असत्य

✶ असत्यकेअनेक रुप होते है, सत्यका केवल एकही रुप रहता है ।

✶ सत्यकी प्रतिष्ठा बढानेकेलिए असत्यका विध्वंस करना पडता है ।

✶ असत्य अंध:काररुप है । यही अंध:कार मनुष्यकोप अधोगतिकी ओर प्रवृत्त करता है । असत्यकेअंध:कारमें फॅसी हुई व्यक्तिको सत्यका प्रकाश नही दीखता ।

✶ असत्य अपंग प्राणिकेसमान होता है । वह दूसरोंका आधार लिए बिना चल नहीं सकता ।

✶ अपने बोलनेसे यदि दूसरोंको नुकसान नहीं पहुँचता तो उसे सत्यवाणी समझनेमें दोष नहीं ।

✶ जब हम दूसरोंको भलाईकेलिए झूठ बोलते हैं, तो वह असत्य भी सत्य हो जाता है ।

मन

✶ जो मनको पराजित कर सकता है, उसकेलिए दुनियाको जितना आसान है ।

✶ सूर्योदय होते हि अंध:कार नष्ट होता है, उसी प्रकार मन प्रसन्न होते हि व्याधियॉ नष्ट हो जाती है ।

✶ अपना मन अपने प्रिय पुत्रकेसमान है, प्रिय पुत्र हमेशा असंतुष्ट रहता है उसी प्रकार मन भी अतृप्त रहता है । इसीलिए मनको हमेशा लगाम लगाना चाहिए ।

✶ मनपर नियंत्रण रखनेमें हि मनुष्यका विकास हो सकता है । मनुष्यपर मन का नियंत्रण रहनेसे उसका विनाश होता है ।

✶ कुरुप मनसे कुरुप चेहरा अच्छा ।

✶ अपना मन महान जादूगर और चित्रकार है । मन याने ब्रह्म सृष्टीका तत्व है ।

✶ मनकेछलनीसे कृतज्ञताकी सुगंध निकल जाती है, लेकिन दु:खकेकंटक रह जाते है ।

✶ मनकी मलिनता नष्ट होनेपर भगवानका दर्शन हो सकता है ।

✶ आदमीका मन हि उसे स्वर्गमें या नरकमें पहुँचाता है ।

प्रार्थना

✶ प्रार्थना याने धर्मका स्तंभ और स्वर्गको पहुँचानेवाली चावी है ।

✶ प्रार्थना याने एकप्रकारका भावात्मक ध्यान है ।

✶ आत्माकी आवाज परमात्मातक पहुॅचानेवाला संदेशवाहक याने प्रार्थना ।

✶ प्रार्थना याने आत्माकी अगाध सुप्त शक्तिको जागृत करनेवाला दैवी सामर्थ्य है ।

✶ प्रार्थनाकी कोमल चाबीसे हि भगवान केमनका द्वार खुलता है ।

✶ शरीर साफ रखनेकेलिए स्नानकी जरुरी है, उसीप्रकार आत्माको निर्मल रखने केलिए प्रार्थनाकी आवश्यकता है ।

✶ जबतक मनकी मलिनता नष्ट नहीं होती, तबतक प्रार्थना करने का हक नहीं पहुॅचता ।

✶ प्रार्थनाकी पुकार याने आत्माकी अत्कंठा । पश्चातापका चिन्ह और सुधारका प्रतीत याने प्रार्थना ।

✶ सत्य, क्षमा, संतोष, ज्ञान, धैर्य, शुद्ध मन और मधुर वचन याने प्रार्थना की भी प्रार्थना है ।

✶ प्रार्थना में ह्रदयहीन शब्दों की अपेक्षा शब्दहीन ह्रदयकी नितांत आवश्यकता है ।

✶ प्रार्थना का अर्थ सदाचरण है ।

✶ प्रार्थना याने मानवताकी पुकार ! आत्नशुद्धीकेलिए, आत्मपरीक्षण केलिए की हुई आर्त पुकार ।

✶ प्रार्थनाकेबिना प्रयत्नको पूर्णता प्राप्त नहीं होती ।

प्रशंसा-स्तुती

✶ स्तुती याने सद्‌गुणोंकी प्रतिछाया ।

✶ स्तुति यह अज्ञानकी पुत्री है ।

✶ प्रशंसा याने दुसरोंकेसद्‌गुणोंकेप्रति ऋण चुकाना ।

✶ प्रत्येक व्यक्ति स्तुतिप्रिय होता है । उसकेकार्यकी मूलप्रेरणा स्तुति ही बनती है ।

✶ प्रशंसाका अलग अलग व्यक्तीपर अलग अलग परिणाम होता है । विचारी व्यक्तिको वह नम्र बनाती है, मुर्खको अहंकारी बनाती है, तो दुर्बलको अतिदुर्बल बनाती है ।

✶ पात्रता बिना प्रशंसा याने छुपा हुआ व्यंग है ।

✶ जो स्तुतिप्रिय होता है, उसका आनंद दुसरोंकी मुठ्ठीमें रहता है ।

✶ झूठी प्रशंसा दुखदायक रहती है ।

✶ प्रज्ञावान और गुणवान लोग जब प्रशंसा करते है तब वह सद्‌गुणी बननेकेलिए प्रेरणा देती है ।

✶ खुशामत करनेवाले बहुत है, लेकिन सच्ची प्रशंसा करना बहुत कम लोग जानते है ।

✶ जिनको प्रशंसा करनेका शौक होता है वे वास्तविक स्तुतिकेलिए अपात्र है ।

बुद्धि-बुद्धिमान

✶ बुद्धिहीन लोग बिना सिंगकेपशुकेसमान है ।

✶ संकटोंका जो निग्रहपूर्वक सामना करता है वही बुद्धिमान है ।

✶ बुद्धिमानकेपास सभीं कुछ रहता है, परंतू मूर्ख व्यक्तिकेपास कुछ नहीं होता ।

✶ संयमहीन बुद्धिमान व्यक्ति नेत्रहीन मशालजी केसमान है । वह दुसरोंको मार्ग दिखाता है लेकिन खुद देख नहीं सकता ।

✶ शरीर पानीसे , मन सत्यसे व आत्मा ज्ञानसे पवित्र रहता है ।

✶ बुद्धिहीन लोगोंको वेदशास्त्रसे क्या लाभ ! अंधे को दर्पणसे क्या लाभ !

✶ दुनियामें बुद्धिका सबसे जादा बुरा उपयोग आदमी हि करता है ।

✶ मानवकी बुद्धि केवल गुणग्रहण ही नहीं करती वह चैतन्यात्मक और सर्जनात्मक भी होती है ।

✶ बुद्धिमान व्यक्तिसे शत्रुता अच्छी लेकिन मूर्खोंकेसाथ मित्रता अच्छी नहीं ।

✶ बुद्धिरुपी नौका मनपवन को वश हुई तो तुम्हे डुबोए बिना नहीं रहती ।

✶ पूर्वयोजनाकेबिना किसी कामका प्रारंभ न करना, और एक बार आरंभ किया हुआ कार्य पूर्ण करना यह बुद्धिमानी का लक्षण है ।

✶ भोला आदमी स्त्रीकेवश होता है, उसी तरह बुद्धि आत्माकेवशमें होती है ।

आलस्य

- आलस्य यह मानव का सबसे बडा शत्रु है ।
- अनेक दु:ख समुह का नाम आलस्य है ।
- सैतान आलसी लोगों में से हि अपना शिष्य चुनता है ।
- आलस्य यह शरीर और मनको मिला हुआ अभिशाप है, दुराचार का जनक है और सैतान का अजय दाता है ।
- आलस्य याने एक प्रकारकी आत्महत्याहि है, क्योंकि आलसी आदमी की मानवता मर जाती है, बाकी रहती है केवल पशुता ।
- आलसी आदमी हमेशा ऋण में रहता है । हमेशा दुसरों केलिए भाररुप बना रहता है ।
- आलस्य को पराजित करकेजीवन केमैदान में जो अपने निश्चय का ध्वजारोपण करता है वही यशस्वी होता है ।
- काम करकेआदमी मरता नहीं, वह आलस्यसे मरता है ।
- आलस्य को तुमने आज का दिन बहाल किया कि, कलका दिन वह खुद छिन लेता है ।
- आलस्य प्रारंभ में सुखकारी लगता है लेकिन उसका अंत दुखमय होता है । तत्परतासे कार्य करना शुरु में कठिण जाता है लेकिन अंतमें सुखदायक होता है।
- आलस्य प्रलोभन का मूल है, रोगको नियंत्रण है, समय की बरबादी है और बेचैनी की जननी है ।
- चींटी केपास जाओ उसकी उद्यमशीलता देखो, और ज्ञानी बनो ।
- आलस्य की गति धीमी होती है, उसकेकारण गरीबी आदमी को लिपटती है ।

धैर्य

- ✶ जिसकेपास धैर्यरुपी धन नहीं वह निर्धन है ।
- ✶ धैर्यवान व्यक्ति अपना निश्चिय किया हुआ कार्य पूर्ण कर सकते है ।
- ✶ धैर्य और पुरुषार्थ केसामर्थ्यसे हमें जो प्राप्ति हो सकती है , वह सामर्थ्य और जल्दबाजी से नहीं ।
- ✶ यदि तुम्हारे पास धैर्य है तो तुम अपने कार्य में सफल हो सकते हो ।
- ✶ धैर्य याने आदमी का सच्चा पराक्रम ।
- ✶ धीरज कडवा रहता है लेकिन उसका फल सुंदर रहता है ।
- ✶ संकट केसमय हिम्मतसे काम लेना याने आधा युद्ध जीतने केसमान है ।
- ✶ कोई निंदा करे या प्रशंसा , धैर्यशाली लोग अपने मार्गसे विचलित नहीं होते ।
- ✶ धैर्यहिन आदमी तेलहीन दीपक केसमान होता है ।
- ✶ धैर्य प्रतिभा केलिए आवश्यक बात है ।
- ✶ धैर्य यह संतोष की शीशी है ।

नसीब-दैव

- ✶ दैवपर विश्वास रखकर जीना यह डरपोकता की निशानी है ।
- ✶ हिम्मतवान लोगोंको नसीब भी साथ देता है ।
- ✶ मनुष्यको अपने चारित्र्य का आधार लेना चाहिए, नसीब का नहीं ।
- ✶ मनुष्य अपने नसीबका स्वयं शिल्पकार है ।

- दुसरोंका मन जीतनेवाला नसीबवान कहा जाता है, लेकिन जो जीतता है उससे अधिक भाग्यवान कोई नहीं ।
- अपने भाग्यको उचित आकार देना मनुष्य केसामर्थ्य केबाहर नहीं ।
- आजका पुरुषार्थ , कल का भाग्य है ।
- ऊँचे कुलमें जन्म देना भाग्यकेहाथमें है, लेकिन मेरा पुरुषार्थ मेरे हाथमें है ।
- भाग्य रज:कणका पर्वत और जलबिंदु का सिंधु बना सकता है ।
- अंधकारमें अपनी छाया छोडकर चली जाती है उसी प्रकार दुर्दैवी व्यक्ति को उसकेसगे संबंधी छोड देते है ।
- विंधिलिखित कभी बदल नहीं सकता ।
- हरेकपर कभी न कभी भाग्य कृपाशाली होता हि है ।
- दैवका और पुरुषार्थका मार्ग भिन्न है । लेकिन जब दोनोंका मिलन होता है, तब अद्‌भुत यशकी प्राप्ति होती है ।
- भाग्य समुद्रकेसमान गहिरा और विशाल है, लेकिन अपने पुरुषार्थ केवर्तन ही छोटे है ।
- बैठनेवाले का भाग्य बैठता है, चलनेवाले का भाग्य चलता है, और सतत सोनेवाले आलसी का भाग्य सोता है ।

मित्र-मित्रता

- मित्रता याने सुखका गुणाकार और दुखोंका भागाकार है ।
- सच्चा मित्र वहीं है, जो मुॅहपर कटु बोलता है लेकिन पीठ पीछे प्रशंसा करता है।
- मित्रता एक चिनगारी केसमान है । वह कब प्रकट होगी इसका नियम नहीं । अनेक वर्षोके सहवासकेबाद भी वह अप्रकट रहेगी । नहीं तो कुछहि दिनोंमें प्रकट होकर दो दिलोंका मिलाप करेगी ।
- ह्रदयमें निस्सिम सेवाभाव हो तो सभी ओर मित्रहि दिखाई देते है ।

- मनुष्यकेहाथकी दस उँगलियॉ उसकी सच्ची मित्र है ।
- मित्रकी मृत्यूकी अपेक्षा, मित्रताकी मृत्यू भयानक है ।
- पात्र और गुणी मित्रका लाभ भाग्यसे हि होता है ।
- मित्रता केवृक्षको हमेशा प्रेमसे हि सोचना चाहिए ।
- जब मित्रहि मित्रको बरबाद करने केलिए तयार हो, तो ह्रदय भयानक शत्रुताका निर्माण होता है ।
- हमला करनेवाले मित्रकी अपेक्षा, प्रशंसा करनेवाला मित्र भयानक है ।
- मित्र व मंत्रपर अविश्वास नहीं करना चाहिए । मित्रपर अविश्वास दिखानेसे मित्रता नष्ट होती है और मंत्रपर अविश्वास दिखानेसे शक्ति कुंठित होती है ।
- मित्रता याने भाग्य ने आदमी को दिया हुआ वरदान है ।
- मित्रकी गलतियों का जिक्र एकांत में करो, लेकिन उसकी प्रशंसा सबकेसामने करो ।
- मित्रता यह लेन-देन का व्यवहार है । जो तुम दुसरोंको दोगे, उसीको तुम्हारे मित्र तुम्हें वापस देंगे । अच्छे मित्र जमा करनेकेलिए अच्छी योग्यता चाहिए ।
- मित्रता केबंधन, संमय की सीमारेखासे सुरक्षित रखना चाहिए ।
- जो हमें पापाचार से दूर रखता है वही सच्चा मित्र है ।

क्षमा

- क्षमा ह्रदय का धर्म है ।
- क्षमा वीरों का भूषण है ।
- क्षमा यही यश है, क्षमा यही धर्म है । क्षमा केकारण हि दिलका अस्तित्व है ।
- पापका पुण्यमें परिवर्तन करनेकी क्षमता क्षमामें है । यह शक्ति दूसरे पदार्थो में नहीं ।
- क्षमाशील व्यक्तिको दुसरे कवचकुंडलोंकी आवश्यकता नहीं है ।

- ✶ क्षमा याने ब्रह्म, क्षमा याने सत्य, क्षमा याने भूत , क्षमा याने भविष्य , क्षमा याने तप और क्षमा याने पावित्र्य है । क्षमा केआधारपर हि यह दुनिया खडी है ।
- ✶ पैरोंकेनीचे कुचले गये फुल पैरोंको सुगंधित करते है , सच्ची क्षमा का यही कार्य है ।
- ✶ जिसकेहाथमें क्षमाका शस्त्र है, उसका दुष्ट क्या बिधाड सकते है ।
- ✶ क्षमा यह मनुष्य का अधिकार है, वह पशुओं में नहीं होती । प्रतिहिंसा पशुओंका धर्म है ।
- ✶ जिनको क्षमा नहीं हो सकती, ऐसे अपराध दुनिया में बहुत कम है ।
- ✶ क्षमा यह दुर्बलों का गुण और समर्थो का भूषण है ।
- ✶ जो बलशाली होकर भी दुर्बलों केअपराध सहते है, वे ही क्षमा शील कहलाते है।
- ✶ जहॉ क्षमा की भावना नहीं, वहॉ प्रेम एक विडंबन बनता है ।
- ✶ क्षमाशील मनमें क्रोधको स्थान नहीं । मृदू और ऋजू अंत:करण में अहंकार व छलकपट को स्थान नहीं । तृप्त मन में लोभ केलिए अनुमात्र स्थान नहीं होता।
- ✶ क्षमा से क्रोध को, भलाईसे बुराई को दान से कृपण को, और असत्य को सत्यसे पराजित करो ।
- ✶ क्षमा एक परम तप है ।
- ✶ प्रतिरोध का आनंद एक दिन मिल सकता है, लेकिन क्षमा का आनंद और गौरव चिरस्थायी होता है ।

अहंकार-अभिमान

- ✶ पराक्रम का आनंद चाहिए लेकिन उन्माद नहीं ।
- ✶ अहंकार यह तप की साधना का महान शत्रू है ।
- ✶ प्रार्थना अहंकार केविनाश का उपाय है ।
- ✶ अहंकार और लोभ आदमीकेदु:खका सबसे बडा कारण है ।

- ✶ अभिमान आठ प्रकार का होत है । सत्ताभिमान , संपत्ती का अभिमान , शक्ति का अभिमान , रुप का अभिमान , विद्वता का अभिमान , कुल का अभिमान , कर्तृत्व का अभिमान ,लेकिन मुझें अभिमान नहीं यह कहना सबसे बडा अभिमान है ।
- ✶ तुम्हारा अहंकार दूसरों को दंश करेगा, लेकिन अध:पात तुम्हारा होगा ।
- ✶ अहंकारी आदमी को दूसरों का अहंकार सहन नहीं होता ।
- ✶ बडे आदमी केअहंकारकी अपेक्षा, छोटे व्यक्ती की श्रद्धा अधिक बलवती है ।
- ✶ अभियानी साधुसे, पश्चातापदग्ध होकर परमेश्वर की क्षमा याचना करनेवाला पापी श्रेष्ठ है ।
- ✶ अहंकार नष्ट हुए बिना आत्मा जागृत नहीं होता ।
- ✶ अहंकार आदमी को सुख देता है, लेकिन आधार नहीं देता ।
- ✶ किसी भी अवस्था में गर्व नहीं करना चाहिए, क्योंकि बहुरुपी आकाश हरेक क्षण में अपना रंग बदलता है ।
- ✶ अभिमान करना , अज्ञानी व्यक्ति का लक्षण है ।

लोभ

- ✶ लोभ यह पाप का मूल है । लोभ स्वंय ही पाप का रुप है ।
- ✶ रागद्वेष से लोभका जन्म होता है । लोभ यह पाप का परमेश्वर है ।
- ✶ मनुष्य वृद्व होता है, लेकिन पाप कभी भी वृद्व नहीं होता ।
- ✶ गरीबी में आदमी की जरुरते कम होती है, लेकिन समृद्वि आनेपर जरुरते भी अधिक बढती है । और जब आदमी लोभी बनता है तब उसकेपाप का अंत नहीं रहता ।
- ✶ लोभी आदमी संपत्ती का स्वामी बनने ने बदले संपत्ती ही उसकी स्वामिनी बनती है ।
- ✶ लोभी आदमी का कोई मित्र नहीं होता, ना कोई गुरु होता है ।

- ✶ पानी से भरी हुई नदी मिलने पर भी समुद्र तृप्त नहीं होता, उसी प्रकार अपार धन मिलने पर भी लोभी आदमी तृप्त नहीं होता ।
- ✶ लोभी आदमी सहारा केरेतीले जमीन केसमान होता है । बरसात का पानी और ओस केबिंदु का भी वह तृषार्त होकर पी जाता है, लेकिन दूसरों केलिए एखाद छोटासा पौधा भी नहीं उगाता ।
- ✶ लोभी आदमी को सभी सुखों की प्राप्ति होनेपर भी वह समाधानी नहीं होता ।
- ✶ क्रोध प्रीती नष्ट करता है, अहंकार विनयशीलता नष्ट करती है, कपट मित्रता नष्ट करती है, और लोभ सद्‌गुणों का नाश करता है ।
- ✶ मनुष्य अगर लोभ को पराजित कर सका , तो वह सम्राट से भी श्रेष्ठ हो सकता है, क्योंकि तृप्त या संतोषी व्यक्ति दुनिया में सीना तानकर चल सकता है ।
- ✶ लालचरुपी अग्नि कब शांत नहीं होती, जो उसका स्वीकार करेगा, उसका लोभाग्नि अधिकाधिक प्रज्वलित हो उठेगा ।
- ✶ उदार ह्रदयी व्यक्ति उसकेजीवन केअंतीम क्षण तक प्रसन्न रहता है, लेकिन लोभी व्यक्ति जीवन केअंत तक दु:खी रहता है ।
- ✶ अपेक्षा कोभ का छोटासा रुप है । अपेक्षा की पूर्ति न होनेपर आदमी दुखी होता है । इसीलिए कोई भी कार्य निरपेक्ष भावना से करना चाहिए ।

कला-कलाकार

- ✶ कला याने सत्य का शृंगार ।
- ✶ सुंदर कला में प्रकृतिका अनुकरण रहता है ।
- ✶ कला का अंतिम और सर्वोच्च ध्येय सौंदर्य दर्शन है ।
- ✶ सच्ची कला परमेश्वर की भक्तीपूर्ण अनुसरण करती है ।
- ✶ कला याने परमोच्च एकता ।
- ✶ विशुद्व कला की निर्मिति केलिए, कलाकार का ह्रदय भी निर्दोष चाहिए ।

✶ सब कलाओं से जीने की कला सर्व श्रेष्ठ है ।

✶ जो सुंदरता को चैतन्य देती है , और भीषणता को अचेतन वहीं सच्ची कला है ।

✶ कलाकार प्रकृतिप्रेमी होता है, वह प्रकृति का दास भी होता है और स्वामी भी ।

✶ प्रत्येक राष्ट्र की संस्कृति और सामाजिक जीवन का प्रतिबिंब कला में होता है ।

✶ कला का प्रारंभ कलाकार केशैशव केपुनरुज्जीवन से हि होता है ।

✶ कला याने सत्य, शिव और सौंदर्य का संमेलन है ।

✶ कला यह जीवन की दासी है, उसका कार्य जीवन की सेवा करना यह है ।

✶ नेत्रों को और कर्णो को आनंद देनेवाली कला से आत्मा को आनंद देनेवाली कला श्रेष्ठ है ।

चारित्र्य-शील

✶ मनुष्य की सबसे श्रेष्ठ संपत्ति उसका चारित्र्य है ।

✶ चारित्र्य का शासन हि तुम्हारे जीवन पर चलता है । चारित्र्य यह प्रतिभा से श्रेष्ठ है ।

✶ मनुष्य केविचार बदलते है, लेकिन उसका चारित्र्य नहीं बदलता । चारित्र्य का विकास हो सकता है ।

✶ जब आदमी का धन नष्ट होता है तो उसका कुछ नहीं नष्ट होता । जब उसका स्वास्थ्य बिगडता है तो उसका कुछ खो जाता है , लेकिन जब उसका चारित्र्य नष्ट होता है तब उसका सभी नष्ट हो जाता है ।

✶ चारित्र्यरुपी हीरे से सभी प्रकार केपत्थर को घिसा जाता है ।

✶ सुंदर चारित्र्य यह सबसे श्रेष्ठ कला है ।

✶ स्वास्थ्य और संयम यह चारित्र्य केदो महत्वपूर्ण अंग (फुप्फुस) है ।

✶ उच्चार से विद्वत्ता आवाज से नम्रता और आचरण से चारित्र्य का बोध होता है ।

✶ यदि मनुष्य का शील अच्छा हो तो उसे जिंदगी में कुछ भी कमी नहीं होती ।

✶ संकटों की अभेद्य दिवार को पार करकेमार्ग निकालनेवाला चारित्र्य हि होता है।

✶ प्रतिभा यह चारित्र्य की दासी है ।

✶ अच्छा आचरण यह यशोमार्ग की पहिली सीढी है ।

दुर्जन

✶ दुर्जन विद्वान होनेपर भी उससे दूर हि रहना चाहिए । मागमणीसे संपन्न नाग दंश करना नहीं छोडता ।

✶ दुर्जन और सॉप में सॉप अच्छा है, क्योंकि सर्प एकबार दंश करता है और दुर्जन बार बार दंश करता है । सर्प क्रुर है दुर्जन भी क्रुर है, लेकिन दुर्जन सर्प से भी भयंकर है । सर्प मंत्र से तो वश होता है, लेकिन दुर्जन को वश करना असंभव है ।

✶ हाथी से हजार फूट, घोडे से सौ फुट, और सींगवाले प्राणी से दस फूट रहना चाहिए । लेकिन दुर्जन केवास्तव्य से हमेशा दूर निकल जाना चाहिए ।

✶ नीम केवृक्ष को दूध और धी केसींचन से भी मिठास नहीं आती । उसी प्रकार अनेक प्रकार के उपदेशों का दुर्जनों पर असर नहीं होता ।

✶ दुर्जनों केमन में एक, जिव्हापर दुसरा और कृति में तिसरा हि होता है । सज्जन काया, वाचा , मन से एक से होते है ।

✶ दुर्जनों की मित्रता अंत में विपदा निर्माण करती है ।

✶ यदि पति-पत्नी दोनों दुर्जन,कृपण और कटुभाषी हो तो वह जीवीत प्रेतों के संगम के समान है।

✶ दुर्जन आश्रय देनेवाले का भी नाश करता है ।

✶ संत का ढोंग करनेवाला दुर्जन अधिक दुष्ट बनता है ।

✶ दुष्टों की संगती से सदाचार नष्ट होता है ।

दुर्जनों केसाथ रहने से अकेला रहना अच्छा । अकेले बैठने से सज्जनों केसाथ बैठना अच्छा ।